भारतीय समाज में वास्तुशास्त्र का वैदिक आधार

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

वास्तुशास्त्र भारतीय ज्ञान-परंपरा की उन प्राचीन और गहन विद्याओं में से एक है, जिसने मानव जीवन, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच संतुलन को केंद्र में रखकर आवास, नगर और स्थापत्य की समग्र अवधारणा विकसित की. यह केवल भवन निर्माण की तकनीक नहीं है, बल्कि एक ऐसा जीवन-दर्शन है जो यह मानता है कि मनुष्य का निवास स्थान उसके शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति, सामाजिक व्यवहार और आध्यात्मिक उन्नति को गहराई से प्रभावित करता है. भारतीय परंपरा में वास्तुशास्त्र को शास्त्र, विज्ञान, कला और आस्था—इन सभी का समन्वय माना गया है. इसका उद्देश्य ऐसा वातावरण निर्मित करना है जिसमें मानव और प्रकृति के तत्व परस्पर सहयोगी बनें, न कि परस्पर विरोधी.

वास्तुशास्त्र का वैज्ञानिक पक्ष आधुनिक समय में विशेष रूप से चर्चित है, क्योंकि आज का मानव पर्यावरणीय असंतुलन, मानसिक तनाव और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों से जूझ रहा है. वास्तुशास्त्र मूल रूप से प्राकृतिक शक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की विद्या है. इसमें सूर्य के प्रकाश, पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र, वायु प्रवाह, तापमान, आर्द्रता, जल की उपलब्धता और ध्वनि के प्रभावों का सूक्ष्म अवलोकन किया गया है. प्राचीन आचार्यों ने अनुभव और दीर्घकालिक अवलोकन के आधार पर यह समझा कि सूर्य की किरणें प्रात:काल पूर्व दिशा से आती हैं और वे शरीर तथा मन के लिए अधिक लाभकारी होती हैं. इसी कारण पूर्व दिशा को शुभ माना गया और भवन में प्रकाश और वायु के प्रवेश के लिए इसका विशेष ध्यान रखा गया. आधुनिक विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि सुबह की धूप में पराबैंगनी किरणों का स्तर संतुलित होता है, जो विटामिन-डी के निर्माण और मानसिक सक्रियता के लिए उपयोगी है.

इसी प्रकार उत्तर दिशा को पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से जोड़ा गया. पृथ्वी का चुंबकीय प्रवाह उत्तर-दक्षिण दिशा में होता है और माना गया कि उत्तर दिशा में शांत, स्थिर और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह अधिक होता है. यही कारण है कि अध्ययन कक्ष, तिजोरी या कार्यस्थल के लिए उत्तर दिशा को उपयुक्त बताया गया. आधुनिक न्यूरोसाइंस और पर्यावरण मनोविज्ञान भी यह संकेत देते हैं कि प्रकाश, दिशा और स्थान की व्यवस्था मानव एकाग्रता और निर्णय क्षमता को प्रभावित करती है. वास्तुशास्त्र में वायु संचार पर भी विशेष बल दिया गया. खुला आंगन, खिड़कियाँ, झरोखे और बरामदे—ये सभी न केवल सौंदर्य के लिए थे, बल्कि प्राकृतिक वेंटिलेशन और ताप नियंत्रण के वैज्ञानिक उपाय थे. आज इन्हीं सिद्धांतों को ग्रीन बिल्डिंग और बायोक्लाइमेटिक आर्किटेक्चर के रूप में पुन: अपनाया जा रहा है.

वास्तुशास्त्र में पंचमहाभूतों की अवधारणा इसका वैज्ञानिक और दार्शनिक आधार है. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—ये पाँच तत्व न केवल सृष्टि के घटक माने गए, बल्कि मानव शरीर और मन के भी आधार हैं. पृथ्वी तत्व स्थिरता और भार वहन का प्रतीक है, जो भवन की नींव और संरचना से जुड़ा है. जल तत्व जीवन, शुद्धता और शीतलता का द्योतक है, इसलिए जल स्रोतों का स्थान और प्रवाह विशेष महत्व रखता है. अग्नि तत्व ऊर्जा, ताप और पाचन से जुड़ा है, अत: रसोई और अग्नि से संबंधित स्थानों का निर्धारण किया गया. वायु तत्व प्राणवायु और संचार का माध्यम है, जो श्वसन और मानसिक ताजगी से जुड़ा है. आकाश तत्व विस्तार, ध्वनि और रिक्तता का प्रतीक है, जो खुले स्थानों और आंतरिक संतुलन से संबंधित है. आधुनिक पर्यावरण विज्ञान और जैव-आर्किटेक्चर भी यह मानते हैं कि इन तत्वों का संतुलन मानव स्वास्थ्य और स्थिरता के लिए आवश्यक है.

स्थापत्य की दृष्टि से वास्तुशास्त्र भारतीय वास्तुकला का मूल आधार रहा है. भारत की प्राचीन सभ्यताओं में नगर नियोजन और भवन निर्माण की उच्च कोटि की परंपरा देखने को मिलती है. सिंधु-सरस्वती सभ्यता के नगरों में सुव्यवस्थित सड़कें, समकोणीय योजना, उन्नत जल निकासी प्रणाली और समानुपाती आवास इस बात का प्रमाण हैं कि उस समय स्थापत्य केवल सहज ज्ञान पर नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच पर आधारित था. बाद के काल में मौर्य और गुप्त काल के नगरों, स्तूपों और राजप्रासादों में भी वास्तु सिद्धांतों का प्रभाव स्पष्ट है. मंदिर स्थापत्य में तो वास्तुशास्त्र अपने चरम पर दिखाई देता है. गर्भगृह की स्थिति, मंडपों की श्रृंखला, शिखर की ऊँचाई और दिशा—ये सभी न केवल धार्मिक प्रतीक हैं, बल्कि ध्वनि, प्रकाश और संरचनात्मक संतुलन के अद्भुत उदाहरण हैं.

भारतीय स्थापत्य में अनुपात और माप का विशेष महत्व रहा है. शिल्पशास्त्र और वास्तुशास्त्र के ग्रंथों में मानव शरीर के अनुपातों के आधार पर भवन के अनुपात निर्धारित किए गए. यह विचार कि मनुष्य सूक्ष्म ब्रह्मांड है और भवन स्थूल ब्रह्मांड का प्रतीक—इस स्थापत्य दर्शन की आत्मा है. इसलिए भवन को केवल ईंट-पत्थर की रचना नहीं, बल्कि एक जीवंत संरचना माना गया. जल संरचनाएँ, कुएँ, बावड़ियाँ और तालाब—ये सभी न केवल उपयोगितावादी थे, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन के केंद्र भी थे. आज जब जल संकट वैश्विक समस्या बन चुका है, तब प्राचीन भारतीय वास्तुशास्त्र की जल प्रबंधन प्रणालियाँ अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती हैं.

वास्तुशास्त्र का वैदिक आधार इसे आध्यात्मिक गहराई प्रदान करता है. ऋग्वेद और अथर्ववेद में भूमि, गृह और दिशा से जुड़े मंत्र मिलते हैं, जो यह दर्शाते हैं कि निवास को पवित्र और संतुलित बनाने की परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है. अथर्ववेद में गृह प्रवेश, शांति और समृद्धि के लिए विशेष मंत्रों का उल्लेख है. ब्राह्मण ग्रंथों और उपनिषदों में ब्रह्मांडीय व्यवस्था और मानव जीवन के सामंजस्य की चर्चा मिलती है, जो वास्तुशास्त्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करती है. वास्तुपुरुष की कल्पना, जिसमें भूमि को एक प्रतीकात्मक पुरुष के रूप में देखा गया, वैदिक प्रतीकवाद का सुंदर उदाहरण है. इसमें विभिन्न दिशाओं और स्थानों को देवताओं से जोड़ा गया, ताकि निर्माण के समय मर्यादा और संतुलन बना रहे.

वेदिक परंपरा में निर्माण को एक पवित्र कर्म माना गया. भूमि पूजन, शिलान्यास, गृह प्रवेश जैसे संस्कार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं थे, बल्कि मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रक्रियाएँ भी थीं, जो व्यक्ति और समुदाय में सकारात्मक भावना और सामूहिक उत्तरदायित्व का विकास करती थीं.

राशिफल

दिनांक- 04 से 10 जनवरी 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य धनु राशि में, मंगल धनु राशि में, बुध धनु राशि में, वक्री गुरु मिथुन राशि में, शुक्र धनु राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मिथुन कर्क सिंह और कन्या राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. इस मास में शनि की गुरू पर दृष्टि एवं मंगल की राहु पर दृष्टि होने से कुछ प्रांतों में प्राकृतिक प्रकोप, हिमपात, कहीं बिजली गिरने की सम्भावना, तूफ़ान आदि से हानि हो सकती है. सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध का गुरू के साथ समसप्तम योग बन रहा है, जिसके प्रभाव से घी, गुड, सोना, चांदी, अनाज दाल में तेजी बनेगी. बाजार की उथल पुथल तेजी मंदी दोनों ओर रहेगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	04 जनवरी को	लुई ब्रेल जयंती,
सोमवार	05 जनवरी को	परमहंस योगानंद जयंती, गुरू गोविंद सिंह जयंती, सौर माघ प्रारंभ,
मंगलवार	06 जनवरी को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, तिल चौथ, संकटा चौथ, गुरू गोकुलदास जन्मोत्सव,
बुधवार	07 जनवरी को	राजिम भक्तिन माता जयंती (छ0ग0)
शनिवार	10 जनवरी को	विश्व हिन्दी दिवस (छ.ग.एच्छिक अवकाश), स्वामी रामानंदाचार्य जयंती

मेष

आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, राजकीय क्षेत्रों में परेशानी आ सकती है, नौकरी में पदोन्नति अथवा जबावदारी के कार्य सामने आने के योग हैं, व्यापारिक क्षेत्रों में प्रगति होगी, बिगड़ा हुआ कार्य बनने का योग है, पुराना पैसा प्राप्त होगा, अथवा गुमी वस्तु मिलने का योग है, निकटस्थ सहयोगियों का अच्छा सहयोग मिलेगा, सप्ताह के बीच थोड़ा बहुत व्यवधान आ सकता है.

वृषभ

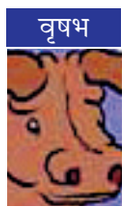

खर्च की अधिकता रहेगी, अचानक आपको पैसे की व्यवस्था करना पड़ सकती है, मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, पारिवारिक उत्तरदायित्व पूरा करना पड़ेगा, नई जिम्मेदारियों को सम्भालने में असमर्थता महसूस कर सकते हैं, राजनैतिक व्यक्तियों से संरक्षण प्राप्त हो सकता है, आर्थिक मदद मिलने का योग है, मान सम्मान मिलेगा.

मिथुन

परिवार के पूज्य व्यक्ति से स्वास्थ्य को लेकर परेशानी रह सकती है, महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी, कुछ आकस्मिक परिवर्तन भी हो सकते हैं, कोई भी कार्य अड़चन के बिना पूरा नहीं होगा, जहां तक बने अपने कार्यों को स्वत: पूरा करने का प्रयास करें, तभी आपको सफ्लता मिल सकती है, परोपकारी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर कार्य करें.

कर्क

राजकीय क्षेत्र में विशेष सफ्लता के योग हैं, कुछ नये आर्थिक समीकरण बनने का योग है, जधनु जायजाद संबंधी कार्यों में अनुकूलता रहेगी, उत्साहवर्धक शुभ समाचार मिलने के योग हैं, नौकरी में उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, व्यवसायिक क्षेत्र में प्रगति होगी, सामाजिक कार्यों में सफ्लता मिलेगी, शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी.

सिंह

इष्ट मित्रों के सहयोग से आपके महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे, संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी, बिना मेहनत से नुकसान का कारण बन सकता है, वास्ते इस ओर सावधानी रखें, जो लोग वायदे का कार्य करते हैं, वे सावधानी रखें, ठेकेदारी आदि क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों को परेशानी हो सकती है, सावधानी बांछनीय है, आर्थिक स्थिति में संतुलन बनाये रखने हेतु प्रयास सार्थक होंगे.

कन्या

सामाजिक कार्यों में विशेष रूचि रहेगी, आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, कहीं से मदद मिलने के योग हैं, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी, विरोधियों का पराभव होगा, साहसिक कार्यों के प्रति अभिरूचि बढ़ेगी, विविध समस्याओं का समाधान होगा, सप्ताह के उत्तरार्ध में अचानक लाभ संभावित है, दाम्पत्य जीवन सुख शांति से व्यतीत होने का योग है.

तुला

बना बनाया काम बिगड़ता नजर आयेगा, किन्तु आपकी सूझबूझ एवं विनम्रता बुद्धिमत्ता से कार्य संभल जायेगा, हो सकता है, आप किसी की मदद भी ले सकते हैं, अपने कार्यों के प्रति आपको स्वयं ही लगन एवं रूचि लेना पड़ेगी, आर्थिक स्थिति में सामान्य की अपेक्षा आंशिक सुधार नजर आयेगा, निकट भविष्य में अच्छे लाभ की संभावना के योग बनते हैं, आमदानी के जरिये बढ़ेंगे.

वृश्चिक

शैक्षणिक जीवन में प्रगतिशीलता बनी रहेगी, नौकरी में उत्साहवर्धक समाचार प्राप्त होने के योग हैं, जमीन जायजाद आदि के कार्यों में अनुकूलता रहेगी, प्रियजनों से संपर्क, मेलजोल बढेगा, पुरानी समस्याओं का सरलता से समाधान हो सकता है, कोई बहुप्रतीक्षित कार्य अचानक बनने का योग है, मान सम्मान में वृद्धि होगी, हर्षोल्लास की स्थितियां बन सकती हैं.

धनु

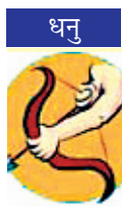

आपका डूबता हुआ पैसा प्राप्त होने से मन में शांति और संतोष रहेगा, भूमि भवन जधनु जायजाद प्रापर्टी के कार्यों में अनुकूलता रहेगी, गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा, सट्टे के व्यापारी सावधानी रखें, मान प्रतिष्ठा पर नजर रखें, पारिवारिक जीवन सुखद एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में व्यतीत होगा.आपके सम्मान पर कोई व्यक्ति ऊंगली उठा सकता है, अत: जोखिम के कार्यो से बचें.

मकर

सामाजिक कार्यों में परिश्रम की अधिकता रहेगी, उचित सफ्लता प्राप्त होने के योग हैं, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी, एकाधिक स्त्रोंतों में आमदानी के योग हैं, जधनु जायजाद में उलझनों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु सारी समस्यों का समाधान भी प्राप्त होगा, सप्ताहान्त में निवास की समस्या का हल होने से मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी.

कुम्भ

इष्ट मित्रों के समर्थन से किसी विशेष उपलब्धि की संभावना है, नौकरी में विशेष प्रसन्नता रहेगी, वायदे के कार्य व्यापार में सावधानी रखें, अन्यथा हानि की संभावना है, अनुबंधों का उचित लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा, किसी हितचिन्तक से विचार विमर्श कर लें, रचनात्मक कार्यों से लाभ होगा, कार्य शक्ति का विकास होगा.

मीन

चिरपरिचित व्यक्तियों से मेल मुलाकात का योग है, आपसी लोगों का सहयोग रहेगा, शिक्षा के क्षेत्र में सावधानी रखकर कार्य करें, प्रतियोगी परीक्षाओं में विशेष ध्यान दें, स्थिति को देखकर कार्य करें, जमीन जायजाद संबंधी समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, सप्ताह के मध्य यात्रा के कारण परेशानी हो सकती है, शारीरिक सुख अच्छा रहेगा.

तिल दान से मिटते हैं पाप बढ़ती है सुख-समृद्धि

एकादशी व्रत से प्रसन्न होते हैं भगवान विष्णु

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, एकादशी तिथि भगवान विष्णु को समर्पित होती है. इस दिन विधिपूर्वक पूजा-अर्चना और व्रत करने से व्यक्ति को न केवल पापों से मुक्ति मिलती है, बल्कि जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का भी वास होता है. हिंदू पंचांग के अनुसार, प्रत्येक माह में दो बार—कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष—एकादशी व्रत रखा जाता है. इन्हीं में से माघ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी को षटतिला एकादशी कहा जाता है.

षटतिला एकादशी का विशेष महत्व तिल से जुड़ा हुआ है. शास्त्रों में बताया गया है कि इस दिन तिल का दान, तिल से स्नान और तिल का भोग लगाने से भगवान विष्णु अत्यंत प्रसन्न होते हैं. मान्यता है कि इस व्रत को श्रद्धा और नियमों के साथ करने से पिछले जन्मों के दोष भी समाप्त हो जाते हैं. यही कारण है कि श्रद्धालु इस एकादशी का पूरे विधि-विधान से पालन करते हैं. वैदिक पंचांग के अनुसार, वर्ष 2026 में षटतिला एकादशी व्रत 14 जनवरी को रखा जाएगा. एकादशी तिथि की शुरुआत 13 जनवरी को दोपहर 03 बजकर 17 मिनट पर होगी और इसका समापन 14 जनवरी को शाम 05 बजकर 52 मिनट पर होगा. व्रत का पारण अगले दिन यानी 15 जनवरी को द्वादशी तिथि पर किया जाएगा. पारण का शुभ समय सुबह 07 बजकर 15 मिनट से 09 बजकर 21 मिनट तक रहेगा.

धार्मिक मान्यता है कि एकादशी के दिन भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा करने से घर में धन-धान्य और सुख-समृद्धि बनी रहती है. इस दिन प्रात: स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए.

षटतिला एकादशी के दिन तिल का दान विशेष फलदायी माना गया है. कहा जाता है कि तिल का दान करने से यमलोक का भय समाप्त हो जाता है. वहीं व्रत के दौरान चावल, तामसिक भोजन और काले वस्त्रों से परहेज करना चाहिए. साथ ही तुलसी के पत्ते तोड़ने से बचना चाहिए. शास्त्रों के अनुसार, व्रत कथा का पाठ किए बिना एकादशी व्रत अधूरा माना जाता है. इसलिए कथा पाठ और विष्णु मंत्रों का जाप अवश्य करना चाहिए, जिससे साधक को व्रत का पूर्ण फल प्राप्त हो सके.

4 जनवरी को स्वराशि में चंद्रमा, इन 3 राशियों को धन लाभ

चंद्रमा के कर्क राशि में प्रवेश से बदलेगा भाग्य, करियर और आर्थिक स्थिति होगी मजबूत

ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा को मन, भावना और मानसिक स्थिति का कारक ग्रह माना जाता है. चंद्रमा का गोचर न केवल व्यक्ति के स्वभाव को प्रभावित करता है, बल्कि करियर, धन और पारिवारिक जीवन पर भी इसका गहरा असर देखने को मिलता है. जब भी चंद्रमा अपनी राशि बदलता है, तो कुछ राशियों के लिए यह बदलाव बेहद शुभ साबित होता है. 4 जनवरी को चंद्रमा मिथुन राशि से निकलकर अपनी स्वराशि कर्क में गोचर करने जा रहे हैं. चंद्रमा का स्वराशि में गोचर होना विशेष महत्व रखता है. इस गोचर के प्रभाव से कुछ राशियों को धन लाभ, करियर में सफलता और मानसिक शांति प्राप्त हो सकती है.

आज हम आपको उन 3 राशियों के बारे में बता रहे हैं, जिनके लिए चंद्रमा का यह गोचर बेहद लाभकारी साबित हो सकता है.

मेष राशि

मेष राशि के जातकों के लिए चंद्रमा का यह गोचर आपके चतुर्थ भाव में होगा. इस दौरान शिक्षा और करियर के क्षेत्र में आपको मनचाहे परिणाम मिल सकते हैं. कार्यस्थल पर आपके काम की सराहना होगी और लंबे समय से अटके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं. यदि आपने किसी को धन उधार दिया था, तो उसके वापस मिलने के योग बन रहे हैं. आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी. पारिवारिक सुख में वृद्धि और स्वास्थ्य भी बेहतर रहेगा.

कर्क राशि

कर्क राशि के जातकों के लिए चंद्रमा का स्वराशि में गोचर बेहद शुभ माना जा रहा है. घर-परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा और अपनों के साथ कहीं घूमने का प्लान बन सकता है. करियर के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे. कुछ लोगों को मनचाही जगह पर काम करने का अवसर मिल सकता है.

कन्या राशि

कन्या राशि के जातकों के लिए चंद्रमा का गोचर आपके लाभ भाव में होगा. इससे आय के नए स्रोत बन सकते हैं. नौकरीपेशा लोगों को पदोन्नति या वेतन वृद्धि का लाभ मिल सकता है. संचित धन में वृद्धि होगी नौकरी की तलाश वालों को मनचाही नौकरी मिलने की संभावना है.

खिड़की बनवाते समय न करें ये गलतियां

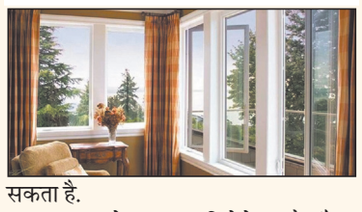

वास्तुशास्त्र में घर के हर कोने और हर वस्तु के लिए विशेष नियम बताए गए हैं. मान्यता है कि अगर घर वास्तु के अनुसार बना हो तो इसका सकारात्मक प्रभाव परिवार के सभी सदस्यों के जीवन पर पड़ता है. वहीं, घर में बनी खिड़कियां भी वास्तु के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण मानी जाती हैं. खिड़कियों का सही दिशा और स्थान पर होना घर में सुख-समृद्धि, शांति और सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने में मदद करता है. लेकिन अगर खिड़कियां गलत दिशा में हों या वास्तु नियमों की अनदेखी करके बनवाई जाएं, तो इससे घर में नकारात्मकता बढ़ सकती है और परिवार के सदस्यों को मानसिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है.

घर बनवाते समय या रिनोवेशन के दौरान खिड़कियों से जुड़े वास्तु नियमों का ध्यान रखना बेहद जरूरी माना जाता है. आइए जानते हैं खिड़की बनवाते समय किन बातों का विशेष ख्याल रखना चाहिए. खिड़की के दरवाजे से जुड़ा वास्तु नियम-वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में खिडकी लगवाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि खिडकी के दरवाजे अंदर की ओर खुलते हों. मान्यता है कि बाहर की ओर खुलने वाली खिड़कियां शुभ नहीं मानी जातीं.

वास्तु के अनुसार, दक्षिण दिशा में खिडकी बनवाना शुभ नहीं माना जाता. लेकिन यदि किसी कारणवश इस दिशा में खिडकी बनानी पड़े या पहले से बनी हो, तो उसे अधिक समय तक खुला न रखें. साथ ही खिड़कियों को साफ-सुथरा रखें और ध्यान दें कि उनसे किसी प्रकार की आवाज या कंपन न हो, क्योंकि इसे भी अशुभ संकेत माना जाता है.

हिन्दू पंचांग या ग्रेगोरियन कैलेंडर?

ग्रेगोरियन कैलेंडर, जिसे सामान्यत : अंग्रेजी कैलेंडर कहा जाता है, वर्ष 1582 ई. में ईसाई धर्मगुरु पोप ग्रेगरी तेरहवें द्वारा प्रचलन में लाया गया. यह कैलेंडर उनके नाम पर ही ग्रेगोरियन कैलेंडर कहलाया .गहराई से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि पोप ग्रेगरी ने कोई नया कैलेंडर नहीं बनाया, बल्कि पहले से प्रचलित जूलियन कैलेंडर में कुछ आवश्यक सुधार किए. जूलियन कैलेंडर का निर्माण रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने किया था. समय की गणना में उत्पन्न हो रही त्रुटियों को सुधारने के उद्देश्य से पोप ग्रेगरी ने इसमें संशोधन कर इसे अधिक सटीक बनाने का प्रयास किया, जिसे बाद में आधुनिक (मॉडर्न) रूप दे दिया गया.

कौशलेश प्रताप

बीसी और एडी की अवधारणा

ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ समय-गणना को बीसी (बेफोरे क्राइस्ट) और एडी (अन्नो डोमिनी) में विभाजित किया गया. एडी (अन्नो डोमिनी) का अर्थ है हमारे प्रभु का वर्ष, बीसी (बेफोरे क्राइस्ट) का अर्थ है ईसा मसीह के जन्म से पूर्व. इस व्यवस्था के माध्यम से ईसाई धर्म को केंद्र में रखकर समय की गणना की गई, जिससे यह भाव उत्पन्न होता है कि ईसा मसीह ही हमारे प्रभु हैं और पूरा संवत् उनके संदर्भ में चल रहा है. जब इस दृष्टिकोण का विरोध हुआ, तब आधुनिक काल में नाम बदलकर किया गया. हालाँकि नाम बदले गए, लेकिन आधार वही बना रहा—ईसा मसीह का जन्म.

ईसा मसीह के जन्म पर प्रश्न

यहाँ एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ईसा मसीह का वास्तविक जन्म-वर्ष और जन्म-तिथि आज भी शोध का विषय है. परंपरागत रूप से 25 दिसंबर को ईसा मसीह का जन्मदिन माना जाता है, परंतु यदि जन्म 25 दिसंबर को हुआ, तो फिर नववर्ष 1 जनवरी से क्यों आरंभ होता है? यह प्रश्न स्वयं इस कैलेंडर की आधारशिला पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है. जूलियस सीजर के बाद किसी ईसाई भिक्षु (मंक) द्वारा इस

काल-गणना को आगे बढ़ाया गया और तिथियों का निर्धारण किया गया, जिनकी वैज्ञानिक पुष्टि आज भी विवादित है.

वैज्ञानिकता पर विमर्श

इस प्रकार ग्रेगोरियन कैलेंडर का आधार पूर्णत: वैज्ञानिक, त्रुटिरहित या खगोलशास्त्रीय दृष्टि से सटीक नहीं माना जा सकता. यह कोई व्यक्तिगत मत नहीं है, बल्कि अनेक पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भी इस पर प्रश्न उठाए गए हैं. प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं दार्शनिक प्रोफेसर सी. के. राजू की पुस्तक यूक्लिड एंड जीसस में भी यह उल्लेख मिलता है कि ईसा मसीह के जन्म से संबंधित तिथियाँ और काल-निर्धारण अभी भी गंभीर शोध का विषय हैं. जब ग्रेगोरियन कैलेंडर का आधार ही अनिश्चित और विवादित है, तब यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या हमें अपनी प्राचीन, खगोलशास्त्र-आधारित, वैज्ञानिक हिन्दू

पंचांग परंपरा को कमतर आंकना चाहिए, या फिर उसके महत्व को पुन: समझने और स्वीकार करने की आवश्यकता है.

आज यदि हम कहते हैं कि 28 दिसंबर है, तो स्वाभाविक प्रश्न उठता है—

यह दिनांक क्या दर्शाती है?

इस माह का नाम दिसंबर क्यों है?

आगामी माह को जनवरी क्यों कहा जाता है?

किसी माह में 28, 29, 30 या 31 दिन क्यों होते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर हमें ग्रेगोरियन कैलेंडर की पृष्ठभूमि समझने पर मिलते हैं.

माहों के नाम और उनके अर्थ

ग्रेगोरियन कैलेंडर के कई माह अपने नामों में ही विरोधाभास दर्शाते हैं— सितंबर : सेप्ट = 7, अक्टूबर : ऑक्ट = 8, नवंबर : नव = 9, दिसंबर : डेका = 10, जबकि आज ये क्रमश: 9वें, 10वें, 11वें और 12वें माह हैं.

इससे स्पष्ट होता है कि प्रारंभ में वर्ष की गणना किसी अन्य बिंदु से होती थी.

रोमन कैलेंडर की उत्पत्ति

प्राचीन रोमन सभ्यता में वर्ष की शुरुआत मार्च माह से मानी जाती थी और उस समय वर्ष केवल 10 महीनों का होता था. बाद में जनवरी और फरवरी को इसमें जोड़ा गया. माहों के नाम भी रोमन संस्कृति और देवताओं पर आधारित हैं—

जनवरी : रोमन देवता जानूस के नाम पर

फरवरी -फब्रुआ नामक उत्सव से

मार्च : युद्ध के देवता मार्स के नाम पर

एप्रिल : लैटिन शब्द एप्रिलिस से (रोमन कैलेंडर का दूसरा माह)

आज हम जनवरी से नववर्ष मनाते हैं, जबकि मूल रोमन परंपरा में नववर्ष मार्च से प्रारंभ होता था.

अवैज्ञानिकता और विरोध

रोमन कैलेंडर में एक वर्ष केवल 304 दिनों का माना जाता था. पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कितने दिनों में पूरी करती है—इसका उन्हें सटीक ज्ञान नहीं था. यही कारण है कि महीनों के दिनों की संख्या असमान और अव्यवस्थित रही. इसी अवैज्ञानिकता के कारण फ्रांस ने ग्रेगोरियन कैलेंडर को अस्वीकार कर अपना नया कैलेंडर बनाया, जिसमें एक सप्ताह के 10 दिन होते थे. लेकिन वह कैलेंडर भी वैज्ञानिक आधार पर स्थिर नहीं रह सका.